शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह-जून 2025

ग्यारहवां वर्ष, अंक - 1

सत्र 2025 - 26 : अपने स्कूल में इस सत्र के लिए

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: नए सत्र हेतु चेक लिस्ट- किया कि नहीं ?

चर्चा पत्र के ग्यारहवें वर्ष के प्रथम अंक में आप सभी का स्वागत है. इस अंक में हम आगामी सत्र में क्या कुछ करेंगे जिससे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने एवं बच्चों की उपलब्धि में सुधार की दिशा में पूरा सिस्टम काम कर सके, इस दिशा में प्लान करेंगे । अगले सत्र में हम निम्नलिखित बिन्दुओं को अपनी अपनी शालाओं में लागू करने की दिशा में मिलकर कार्य करेंगे:

1. प्रारंभिक शालाओं (कक्षा 1 से 8) में शाला प्रबन्धन समिति (SMC) एवं हाई-हायर सेकन्डरी शालाओं (9-12) में शाला विकास एवं प्रबन्धन समिति (SMDC) का गठन कर समिति के चयनित सदस्यों के नाम शाला के बाहरी दीवार पर लिखना एवं उनका सतत क्षमता विकास ।
2. शालाओं में चुनाव के माध्यम से बच्चों के क्लब का गठन- प्राथमिक शाला (बाल सभा), उच्च प्राथमिक शाला (बाल केबिनेट), हाई-हायर सेकन्डरी स्तर (युवा एवं इको क्लब) एवं सभी शालाओं में मिशन लाइफ के गठन का निर्धारित प्रारूप में नोटिफिकेशन ।
3. शालाओं में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप कक्षा शिक्षण हेतु शिक्षकों के पीएलसी के माध्यम से नियमित तैयारी एवं नवाचारी आइडियाज को साझा कर कक्षा में उपयोग करने का कल्चर राज्य में विकसित करना प्राथमिक स्तर पर Toy Pedagogy, उच्च प्राथमिक स्तर पर Experiential learning, हाई-हायर सेकन्डरी स्तर पर Co-operative learning आदि ।
4. शालाओं में विद्यार्थियों के सहयोग से किचन गार्डन तैयार करना ।
5. शालाओं में गणित एवं विज्ञान क्लब का गठन कर सत्र के लिए योजना ।
6. शाला क्षेत्र में शाला से बाहर के बच्चों OOSC का विवरण क्लब के माध्यम से एकत्र कर उनका एवं शाला त्याग की संभावना वाले विद्यार्थियों का विवरण प्रत्येक शाला में रखते हुए उन्हें मुख्यधारा में बनाए रखने हेतु प्रयास ।
7. विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों CWSN की शिक्षा को जारी रखने हेतु आवश्यक प्रयास एवं विभिन्न योजनाओं का लाभ ऐसे बच्चों को दिलवाना ।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों को स्थानीय भाषा में सीखने में सहयोग देने हेतु शिक्षकों द्वारा आवश्यक तैयारी एवं सामग्री विकसित करते रहना ।

1. सभी बच्चों में FLN अनुसार अपेक्षित दक्षताओं को बहुत अच्छे से हासिल करवाने में पूरा सहयोग देना एवं नियमित निरीक्षण प्रणाली का विकास ।
2. शिक्षकों के क्षमता विकास हेतु आपस में एक दूसरे से सीखने हेतु विभिन्न मुद्दों का निर्धारण कर उसमें सक्रिय प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी (PLC) का गठन ।
3. शाला संकुल स्तर पर विभिन्न शालाओं में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर शालाओं में इनके नियमित उपयोग हेतु योजना बनाकर कार्य करना । (Twinning of Schools)
4. शाला संकुल प्राचार्य द्वारा अपने शाला संकुल के भीतर की शालाओं में गुणवत्ता सुधार हेतु सभी आवश्यक प्रयास करते हुए जिम्मेदारियां लेना ।
5. प्रत्येक संकुल में मूलभूत भाषा एवं गणित में दक्ष दो शिक्षकों को अपने संकुल में सभी बच्चों में FLN के लक्ष्यों को समय पर प्राप्त करने हेतु मेंटर Mentor के रूप में चयन कर उन्हे जिम्मेदारी देना ।
6. प्रत्येक विद्यार्थी में किसी विशिष्ट कौशल के विकास के लिए शाला समय से अतिरिक्त समय में अभ्यास एवं सीखने हेतु समुदाय से उस विधा के विशेषज्ञों को जोड़कर हुनरमंद बनाने की दिशा में कार्य ।
7. प्रत्येक संकुल एवं विकासखंड में राष्ट्रीय शिक्षा नीति NEP 2020 को लागू करने हेतु एक सशक्त दल का गठन कर उनके माध्यम से क्रियान्वयन ।
8. मुख्यमंत्री शिक्षा गुणवत्ता अभियान के अनुरूप सभी शालाओं में उच्च स्तरीय मानक को लागू करने की दिशा में समेकित प्रयास ।
9. राज्य स्तर पर निर्धारित कार्यों को शत-प्रतिशत शालाओं में समय पर पूरा करने हेतु सोशियल मीडिया का सफल एवं प्रभावी उपयोग सुनिश्चित करना ।
10. प्रत्येक ग्राम में माताओं का सक्रिय समूह (AMC) के माध्यम से बच्चों को घर पर सीखने हेतु समुचित वातवरण एवं सभी आवश्यक सहयोग देना ।
11. शाला परिसर को आकर्षक बनाना एवं सीखने का वातावरण निर्माण । और अंत में सबसे महत्वपूर्ण, बच्चों की **सुरक्षा** पर विशेष ध्यान ।

एजेंडा दो: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप FLN के लक्ष्य की प्राप्ति

अपने स्कूल को NEP 2020 अनुरूप FLN के लक्ष्यों को समय पर प्राप्त करने हेतु हम सब मिलकर निम्नलिखित कार्य इस सत्र में सुनिश्चित करेंगे:

1. स्कूलों में NEP अनुरूप कक्षाओं के चरण का निर्धारण कर सीखने-सिखाने हेतु आवश्यक प्रावधान करते हुए योजना बनाएंगे-
   a. **आधारभूत चरण (Foundational Stage)** - 3-8 आयु वर्ग के बच्चे. इसमें आंगनबाडी से कक्षा 2 तक के बच्चे शामिल ।
   b. **प्रारंभिक चरण (Preparatory Stage)** - 8-11 आयु वर्ग के बच्चे. इसमें कक्षा 3 से 5 तक के बच्चे शामिल ।
2. प्रत्येक प्राथमिक शाला में कक्षा तीन तक के लिए निर्धारित लर्निंग आउटकम को दीवार पर प्रदर्शित करते हुए प्रत्येक बच्चे में उन आउटकम को हासिल करने की दिशा में निरंतर प्रयास करते हुए उनके उपलब्धियों की नियमित ट्रेकिंग ।
3. निकट के आंगनबाडी के साथ नियमित संपर्क में रहते हुए वहां अध्ययन कर रहे प्रत्येक बच्चे में निर्धारित दक्षताओं को हासिल करने पर फोकस ।
4. FLN पर अब तक प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर प्रत्येक बच्चे में इन लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु ठोस कार्ययोजना बनाकर उनका क्रियान्वयन ।
5. FLN के लिए निर्धारित दक्षताओ में प्रत्येक बच्चे के अद्यतन स्थिति की जानकारी लेते हुए उनमें सुधार के लिए निरंतर ठोस प्रयास करते रहना ।
6. माताओं को अंगना म शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से जोड़कर बच्चों को घर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग कर सीखने में सहयोग देने हेतु तैयार करना ।

FLN: प्रारंभिक शिक्षा की नींव मजबूत करने की दिशा में एक पहल

7. स्थानीय भाषा में बच्चों को सिखाने हेतु बच्चों के घर की भाषा सीखना एवं समुदाय के सहयोग से स्थानीय भाषा में विभिन्न सामग्री तैयार कर उपयोग ।
8. मुस्कान पुस्तकालय का प्रत्येक बच्चे द्वारा नियमित उपयोग एवं प्रत्येक बच्चे के पठन कौशल की नियमित जांच कर उनमें सुधार के लिए आवश्यक कार्यवाही ।
9. बच्चों को जोड़ी में पठन (Pair Reading) पर अभ्यास के अवसर देना ।
10. भाषा एवं गणित की अभ्यास पुस्तिकाओं का नियमित कार्य एवं फीडबैक देना ।

संकल्प से सिद्धि की ओर – FLN मिशन में शिक्षकों की प्रतिबद्धता

" FLN के लक्ष्यों के विरुद्ध हमारी उपलब्धि बहुत कम है और इस दिशा में हम सबको मिलकर बहुत अधिक मेहनत करने की आवश्यकता है । "

एजेंडा तीन: स्कूलों में सामुदायिक सहभागिता के क्षेत्र

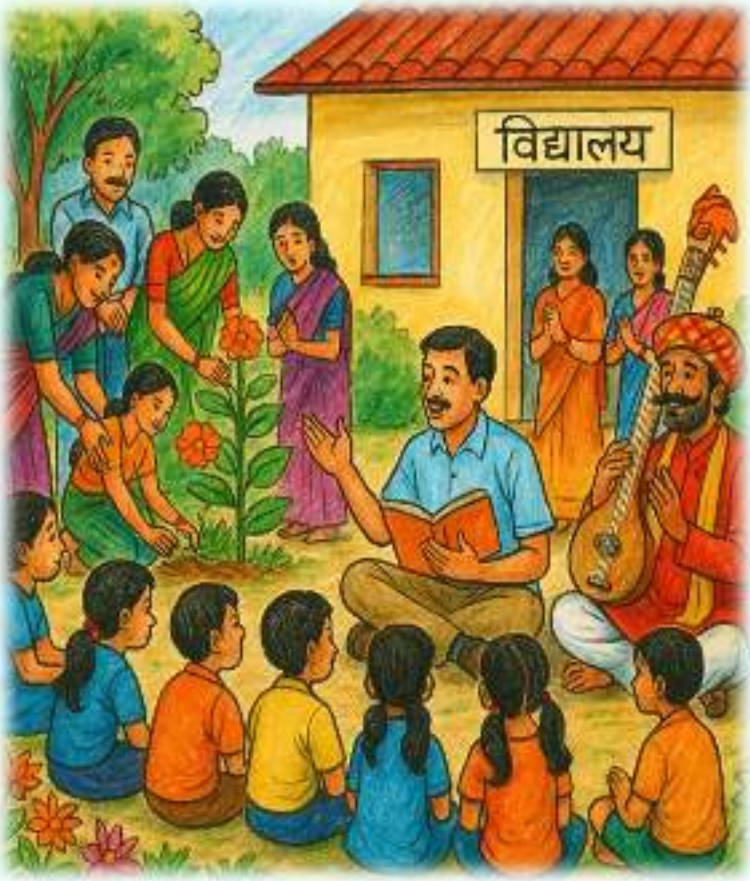

स्कूलों को अपने विकास के लिए समुदाय से निम्नलिखित क्षेत्रों में सहयोग लिया जाना चाहिए:

1. प्रत्येक स्कूल को अपने भूतपूर्व विद्यार्थियों की पहचान कर उनका एलुमनी समूह (Alumni Group) बनाकर उनके माध्यम से स्कूलों के विकास में सहयोग लेने की प्रक्रिया प्रारंभ कर सुधार कार्य कर सकेंगे ।
2. प्राथमिक कक्षाओं में समग्र प्रगति कार्ड (HPC) में पालकों का अभिमत लेना सुनिश्चित करना होगा. इस बात की समीक्षा कर लेवें कि विगत वर्ष के समग्र रिपोर्ट कार्ड में प्रत्येक बच्चे के पालक द्वारा उनका अभिमत लिखा जाए ।
3. कक्षा पहली में अध्ययन कर रहे बच्चों को शुरुआती 90 दिनों तक शाला के लिए तैयारी कार्यक्रम (School Readiness Program) लागू करने में पालकों का सक्रिय सहयोग लिया जाए ।
4. वर्षा ऋतू के दौरान स्कूल प्रारंभ होते समय कुछ मरम्मत की आवश्यकता होती है. इस कार्य हेतु समुदाय से श्रमदान लिया जा सकता है ।
5. स्कूलों में सुरक्षा की दृष्टि से ओडिट की आवश्यकता होती है, इस हेतु शाला सुरक्षा ओडिट समिति का गठन कर शाला एवं परिसर की सुरक्षा ओडिट कर ऐसे सभी प्रावधान जिससे बच्चों की सुरक्षा को खतरा हो, सुधार लेंगें ।
6. बच्चों को स्कूल में बनाए रखने एवं रूचि विकसित करने समय समय पर समुदाय के बड़े-बुजुर्गों को स्थानीय कहानियाँ सुनाने हेतु आमंत्रित करेंगे ।
7. समय समय पर पालक-शिक्षक सम्मेलन का आयोजन कर बच्चों के बारे में पालकों को फीडबैक देते हुए एक दूसरे की अपेक्षाओं की जानकारी देंगे ।
8. बच्चों को समय पर तैयार कर प्रतिदिन स्कूल भेजने हेतु प्रेरित करेंगे ।
9. प्रतिदिन शाला में बच्चों ने क्या सीखा, इस पर नियमित जानकारी लेंगे एवं उनके नोटबुक, अभ्यास पुस्तिकाओं में किए जा रहे कार्यों पर नजर रखेंगे ।
10. बच्चों में कला एवं व्यवसायिक शिक्षा संबंधी कौशल विकसित करने की दिशा में आवश्यक सहयोग प्रदान करेंगे ।
11. शालाओं में पोषण वाटिका निर्माण एवं उसके रख-रखाव में सहयोग देना ।
12. बस्ताविहीन शनिवार के दिन विभिन्न गतिविधियों के आयोजन में सहयोग ।

एजेंडा चार: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षण विधियां

आगामी सत्र में हम सभी को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में उल्लेखित शिक्षण-पद्धतियों को अपनी अपनी कक्षाओं में उपयोग में लाकर हो रहे परिवर्तनों/ सुधारों को देखना होगा. इन शिक्षण विधियों के कक्षा में उपयोग के दौरान इन सिद्धांतों पर विशेष ध्यान देवें:

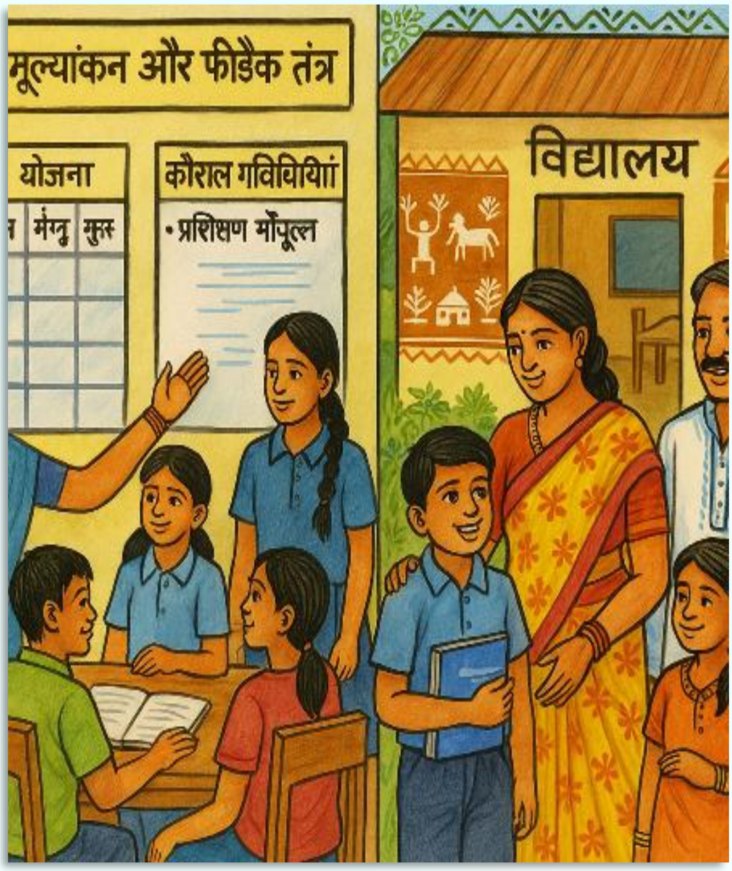

- विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षा: विद्यार्थी की जरूरतों, रुचियों और क्षमताओं पर ध्यान दें ।
- कौशल-आधारित शिक्षा: कौशल, ज्ञान और मूल्यों के विकास पर जोर दें ।
- अनुसंधान-आधारित शिक्षा: विद्यार्थियों को जिज्ञासा, अन्वेषण और खोज के लिए प्रोत्साहन ।
- अनुभव-आधारित शिक्षा: अनुभव, परियोजनाएं और समुदाय सेवा को एकीकृत करें ।

NEP 2020 में सुझाई गयी शिक्षण पद्धतियाँ (Pedagogical Approaches) :

- खेल-आधारित शिक्षा (आयु 3-8): खेल के माध्यम से संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक कौशल विकसित करें । (play-based learning)
- खिलौना-आधारित शिक्षा (आयु 3-11): खिलौनों के माध्यम से सीखना ।
  (Toy-based pedagogy)
- क्रिया-आधारित शिक्षा (आयु 8-11): विद्यार्थियों को हाथों-हाथ गतिविधियों, परियोजनाओं और प्रयोगों में शामिल करें । (Activity-based learning)
- अनुभव-आधारित सीखना (आयु 11-18) - विद्यार्थियों को सीखने का अनुभव लेने का अवसर प्रदान करें । (Experiential Learning)
- परियोजना-आधारित शिक्षा (आयु 11-18): विद्यार्थियों को वास्तविक दुनिया की परियोजनाओं पर काम करने के लिए प्रोत्साहित करें, जिसमें कई विषयों का एकीकरण हो । (Project-based learning-PBL)
- फ्लिप्ड क्लासरूम: पारंपरिक व्याख्यान-गृहकार्य प्रारूप को उल्टा करें, और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके कक्षा के बाहर निर्देश दें । (Flipped Class)
- कहानियों के माध्यम से सीखना । (Learning through stories)

<u>शिक्षण -अधिगम रणनीतियाँ (Teaching-Learning Strategies)</u>

- भिन्नता-आधारित शिक्षा: विद्यार्थियों की विविध जरूरतों को पूरा करने के लिए निर्देश को अनुकूलित करें ।
  (Differentiated Instruction: Tailor Instructions to meet the diverse needs of students)
- प्रौद्योगिकी एकीकरण: शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाएं । (Technology Integration: Leverage technology to enhance teaching, learning, and assessment.)
- सहयोगी अधिगम: विद्यार्थियों को एक साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करें, जिससे सामाजिक कौशल और टीम वर्क को बढ़ावा मिले । (Collaborative Learning: Encourage students to work together, promoting social skills and teamwork.)
- रूपरेखा और योगात्मक मूल्यांकन: निरंतर मूल्यांकन का उपयोग करके निर्देश को सूचित करें और छात्र अधिगम का मूल्यांकन करें । (Formative and Summative Assessments: Use continuous assessments to inform instruction and evaluate student learning.)

- दक्षता-आधारित शिक्षा (Competency-based teaching-CBA): इस पद्धति के लागू होने से हमारी कक्षाओं में सीखने-सिखाने की प्रविधियों में व्यापक एवं वृहद परिवर्तन दिखाई देगा. परंपरागत शिक्षण पद्धति के बदले बच्चों को ज्ञान के अर्जन के साथ-साथ कौशल, दक्षताओं एवं सीखी हुई बातों को दैनिक जीवन में उपयोग कर सकने में सक्षम हो सकेगा । परख सर्वेक्षण में पूछे जाने वाले प्रश्न दक्षता-आधारित होंगे अर्थात इन प्रश्नों से बच्चों द्वारा सीखे हुए तथ्यों को दैनिक जीवन में उपयोग कर सकने के कौशल का आकलन किया जा सकेगा ।

उपरोक्त सभी बिन्दुओं को अपनी कक्षाओं में बेहतर एवं प्रभावी ढंग से लागू करने हेतु निम्नलिखित कार्यवाहियां अपने संकुल स्तर पर अवश्य करें ताकि इसका लाभ मिल सके:

- जिला, विकासखंड एवं संकुल स्तर पर शिक्षण विधियों को लागू करने हेतु विशेषज्ञ टीम का गठन (PLC) कर उन्हें विभिन्न शिक्षण विधियों का बारीकी से अध्ययन करने एवं इंटरनेट से महत्वपूर्ण जानकारियाँ हासिल कर साझा करने की जिम्मेदारे देवें ।
- इन विशेषज्ञों के माध्यम से अन्य शाला के शिक्षकों को विभिन्न विधाओं से परिचित करवाएं ।
- विषयवस्तु को कक्षा में सीखने में सहयोग देने हेतु कुछ आदर्श शिक्षण योजनाएं बनाकर उसके छोटे छोटे वीडियो शिक्षकों के साथ साझा करें ताकि प्रविधियों की समझ बन सके ।
- शिक्षण विधियों के आधार पर आदर्श शिक्षण योजना बनाने हेतु डाईट का सहयोग लेवें ।

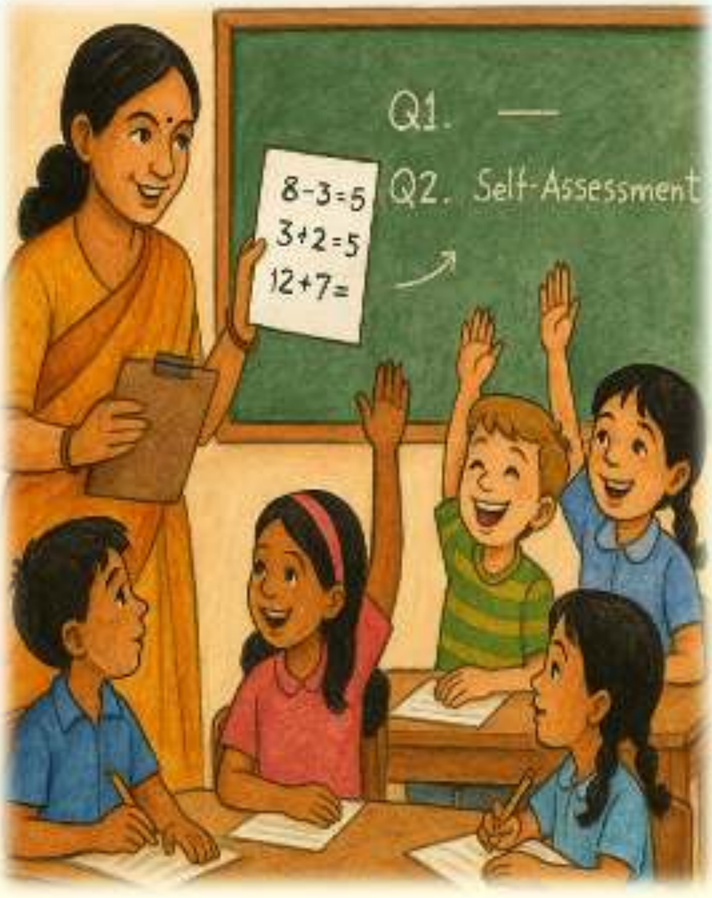

- शिक्षकों को विभिन्न शिक्षण विधियों को अपनाते हुए छोटे छोटे पाठ योजनाएं बनाकर समूहों में साझा करने हेतु प्रेरित करें एवं बेहतर नवाचारी पाठ योजनाओं को प्रोत्साहित करें ।
- एक कुशल टीम के सहयोग से पूरे पाठ्यक्रम को कक्षा में सीखने में सहयोग हेतु कुछ नवाचारी शिक्षण योजनाओं को तैयार कर साझा करें ताकि सभी शिक्षकों को इन शिक्षण प्रविधियों को कक्षा में नियमित उपयोग के लिए तैयार किया जा सके ।

“ इस सत्र में सभी शालाओं में सभी कक्षाओं में सभी शिक्षकों द्वारा NEP 2020 में उल्लेखित विभिन्न शिक्षण विधियों का नियमित उपयोग सुनिश्चित कर इनके उपयोग की ट्रेकिंग करें । “

एजेंडा पांच: शिक्षकों का सतत क्षमता विकास
(Continuous Professional Development- CPD)

जिला, विकासखंड एवं संकुल स्तर पर स्रोत केन्द्रों के माध्यम से शिक्षकों के क्षमता विकास पर ध्यान देना होगा. प्रशिक्षित एवं कुशल शिक्षक ही अपनी कक्षाओं में बेहतर परिणाम दे सकेंगे । किसी भी प्रशिक्षण कार्यक्रम को डिजाइन या तैयार करते समय उसके माध्यम से हमारी कक्षाओं में किस प्रकार के बदलाव आएँगे और बच्चों की उपलब्धि में कैसे सुधार लाया जा सकेगा, इस पर विशेष ध्यान देते हुए इन मुद्दों पर सतत ट्रेकिंग की व्यवस्था की जानी होगी. शिक्षकों के सतत क्षमता विकास हेतु निम्नलिखित प्रक्रियाओं को अपनाया जा सकता है:

- निरंतर प्रशिक्षण: शिक्षकों के लिए नियमित प्रशिक्षण और पेशेवर विकास के अवसर प्रदान करें । (Ongoing Training: Provide regular training and professional development opportunities for teachers)
- मेंटरशिप: अनुभवी शिक्षकों को नए शिक्षकों के साथ जोड़कर उनके विकास का समर्थन करें । (Mentorship: Pair experienced teachers with new educators to support their growth. FLN हेतु प्रत्येक संकुल में दो मेंटर बनाकर उन्हें जिम्मेदारी देवें ।
- सहकर्मी अधिगम: शिक्षकों को एक दूसरे से सीखने के लिए प्रोत्साहित करें, सहयोगी पेशेवर विकास के माध्यम से । (Peer Learning: Encourage teachers to learn from each other through collaborative professional development)
- स्रोत केन्द्रों एवं शालाओं को प्रदत्त पठन सामग्री का स्व-अध्ययन कर उन पर आपस में चर्चा कर समझ विकसित करते हुए कक्षा में उपयोग सुनिश्चित करना (Discussion on the print materials shared with schools and plan the implementation of different instructions suggested in the reading materials)
- संकुल स्तर पर मासिक समीक्षा बैठक सह प्रशिक्षण का आयोजन कर चर्चा पत्र पर चर्चा कर अपने संकुल के लिए ठोस कार्यक्रम तैयार कर उनका क्रियान्वयन I (Discussion on the monthly Charcha Patra and designing strategies for implementing different agendas in the schools)
- विभिन्न महत्वपूर्ण मुद्दों पर विषय विशेषज्ञों के सहयोग से वेबीनारों का आयोजन कर शिक्षकों का नियमित क्षमता विकास I (Organizing Webinars on different topics with the help of experts)

- संकुल एवं विकासखंड स्तर पर विभिन्न मुद्दों पर सेमीनारों का आयोजन कर शिक्षकों को अपने विचारों को साझा करने का अवसर देते हुए नए आइडियाज को सामने लाना I (brining new and out of box ideas on different topics through seminars)
- शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों को कुछ मुद्दों पर पठन सामग्री पढने का अवसर देते हुए उस पर उन्हें लिखित परीक्षा में शामिल होने हेतु प्रोत्साहित करें । जैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के एक चेप्टर को पढने हेतु उपलब्ध कराएं और उसे पढने के लिए कुछ दिन देते हुए, फिर उस पर आधारित आनलाइन टेस्ट लेकर प्राप्त अंकों से अवगत करवाएं । ऐसा समय समय पर करते हुए सभी में पढने की संस्कृति विकसित करने का प्रयास करें ।

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप शिक्षण पद्धतियों के कक्षा में उपयोग से संबंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन जिले एवं विकासखंड स्तर पर करते हुए शिक्षकों को नवाचारी शिक्षण पद्धतियों के उपयोग हेतु प्रेरित करें ।

" राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार सभी शिक्षकों को प्रतिवर्ष 50 घंटे का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य है. आप देख लें कि आपने निर्धारित अवधि का प्रशिक्षण ले लिया अथवा नहीं । "

एजेंडा छह: विद्यार्थियों का कौशल विकास
(Skill Development)

बहुत वषों पूर्व एक राज्य में बच्चों को बाल काटने का काम एक स्थानीय नाई के माध्यम से सिखाया गया था । जिसकी खूब चर्चा हुई थी और विभिन्न कौशलों को स्कूलों में सिखाने की परंपरा शुरू करने हेतु प्रेरित किया गया । इस सत्र में सभी स्कूल अपने सभी बच्चों को उनके आयु-अनुरूप विभिन्न कौशलों को समुदाय के सहयोग से सीखने के अवसर देते हुए इसका रिकार्ड अपने पास रखें । पाक कला, सब्जी उत्पादन, कुक्कुट पालन, लोक कला, परंपरागत व्यवसायों एवं ऐसे कौशल जिसको सिखाने हेतु इच्छुक विशेषज्ञ उपलब्ध हों, पालक उन्हें अपने बच्चों को सिखाने हेतु सहमत हों, स्कूल एवं समुदाय के पास उन्हें सिखाने के लिए पर्याप्त संसाधन सुलभ हों, तो ऐसी स्थिति में शाला प्रबन्धन समिति के साथ मिलकर बच्चों को विभिन्न कौशल सीखने में सहयोग करने के अवसर उपलब्ध कराते हुए इसका नियमित अभ्यास करवाएं । कौशल का चयन करते समय उसकी भविष्य में उपयोगिता, सुरक्षा एवं मांग आदि का अध्ययन कर लेवें ।

" अगले सत्र में आपसे आपकी शाला में अध्ययनरत प्रत्येक बच्चे को किन कौशल में आपने दक्ष करवाया, इसकी जानकारी संकलित की जाएगी ।"

एजेंडा सात: सौ दिवसीय गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम

(100 days Quality Improvement Program): स्थानीय इतिहास लेखन

राज्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित टास्क क्रमांक 207 जिसमें कक्षा 1 से 12 वीं में एक अनुभवात्मक गतिविधि के रूप में छात्रों द्वारा स्थानीय क्षेत्र और स्कूल के इतिहास का मानचित्रण लेखन रणनीतिक योजना और सुदृढ़ीकरण का क्रियान्वयन निर्देशित किया गया है, के पालनार्थ आगामी सौ दिनों में सभी स्कूलों द्वारा अपने विद्यार्थियों के सहयोग से इस टास्क को पूरा किया जाएगा. इस हेतु निम्नलिखित चरणों का पालन किया जाएगा:

चरण एक: जिले एवं विकासखंड स्तर पर इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु टास्क फ़ोर्स का गठन जिसमें इस विषय के विशेषज्ञ एवं इच्छुक शिक्षक शामिल होकर इस कार्य को सभी शालाओं के माध्यम से पूर्ण करवा सके।

चरण दो: शाला एवं अपने क्षेत्र के इतिहास लेखन हेतु जिले स्तर पर विशेषज्ञ समिति के माध्यम से एक उपयुक्त सुझावात्मक सरल प्रारूप को शालाओं को उपलब्ध करवाना।

चरण तीन: विद्यार्थियों को छोटे-छोटे समूह में बांटकर अलग अलग क्षेत्र देते हुए बड़े-बुजुर्गों से स्थानीय इतिहास की जानकारी एकत्र करने हेतु तैयार करना, प्रशिक्षित करना।

चरण चार: विद्यार्थियों के समूह द्वारा अपने आसपास के बड़े-बुजुर्गों से इंटरव्यू आदि लेकर एवं अपने आसपास के इतिहास की जानकारी एकत्र करना एवं उसे एक कहानी के रूप में रोचक तरीके से लिखने का प्रयास करना।

चरण पांच : बच्चों द्वारा लिखे गये इतिहास का समुदाय के समक्ष वाचन कर उसमें आवश्यक संशोधन एवं सुधार कर अनुमोदन लेना।

चरण छह: शाला-संकुल-विकासखंड-जिला स्तर पर सभी शालाओं से उनके द्वारा तैयार कहानियों का संकलन, सुधार एवं पुस्तक के रूप में संकलन करना।

चरण सात: 15 अगस्त, 2025 के दिन स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर शाला- संकुल-विकासखंड-जिला स्तर पर इस प्रकार तैयार सामग्रियों का विमोचन।

" सभी शालाएं उपरोक्तानुसार अपने अपने विद्यार्थियों के सहयोग से स्थानीय इतिहास एवं स्कूल का इतिहास लिखने का कार्य आगामी 100 दिनों के भीतर संपादित कर लेवें. सभी शालाओं में तैयार इतिहास पुस्तिका का संकलन कर उसके आनलाइन वर्जन को साझा करने हेतु आवश्यक व्यवस्थाएं की जा सकेंगी. जिले एवं विकासखंड स्तरीय टीम इस कार्य में आवश्यक सहयोग प्रदान करेगी।"

सहायता हेतु लिंक को क्लिक कर दिए गए निर्देश एवं सामग्री का अवलोकन करें – PDF लिंक –

निर्देश – https://drive.google.com/file/d/1OG7GjEOzgR2rpfIR8Oi5ykJ35UD53ITO/view?usp=sharing

एक नमूना स्वरूप उदाहरण – https://drive.google.com/file/d/1C_HNyuePOg1aM5jNHSjx2-96nCy5Bwsc/view?usp=sharing

आप नीचे दिए गए google form में जानकारी प्रपत्र अनुसार भरकर हमें साझा कर सकते हैं –

(गूगल फॉर्म) लिंक – https://forms.gle/CjWtxZtNBnFBVPFm9

एजेंडा आठ: सौ दिवसीय गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम (100 days Quality Improvement Program): FLN मिशन को हासिल करने के लिए स्वयंसेवकों, सहकर्मी समूह को जोड़ना

राज्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लेखित टास्क क्रमांक 54 के अनुसार राज्य में FLN मिशन को हासिल करने के लिए स्वयंसेवकों, सहकर्मी समूह को जोड़ने के लिए दिशानिर्देश बनाकर आवश्यक कार्यवाही की जानी है. इस दिशा में अब तक प्रमुख रूप से निम्नलिखित कार्य संपादित किए गए हैं:

1. अंगना म शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत माताओं का उन्मुखीकरण कर उनके माध्यम से बच्चों को घर पर सीखने में सहयोग दिया जा रहा है ।
2. प्रत्येक संकुल में भाषा एवं गणित के लिए दो शिक्षकों का चयन कर मेंटर के रूप में अन्य शिक्षकों को FLN के लक्ष्य प्राप्ति में सहयोग देने हेतु जिम्मेदारी दी जा रही है ।

नवीन सत्र में FLN के लक्ष्यों को शीघ्र प्राप्त करने में सहयोग हेतु निम्नानुसार कार्य किया जाना प्रस्तावित है:

- अंगना म शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से छोटी कक्षाओं में पढ़ रहे बच्चों की माताओं का समूह बनाकर उन्हें अपने घर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग कर FLN संबंधी मुद्दों पर समर्थन देने हेतु तैयार किया जाए । प्रत्येक गाँव में एक सक्रिय माता का चयन स्मार्ट माता के रूप में करते हुए उनके नेतृत्व में इस कार्य को नियमित रूप से संपादित किया जाए. यह पूरा कार्य राज्य-जिला-विकासखंड स्तरीय कोर ग्रुप के सहयोग से किया जाए ।

- संकुल स्तर पर चयनित भाषा एवं गणित के मेंटर द्वारा अपने संकुल के सभी प्राथमिक स्कूलों के सभी बच्चों का FLN के परिप्रेक्ष्य में हो रही प्रगति का रिकार्ड रखा जाए और शिक्षकों के माध्यम से बच्चों के दक्षताओं के विकास के लिए निरंतर कार्य किया जाए । चयनित मेंटर नियमित रूप से शिक्षकों के साथ मिलकर सुधार कार्य करना जारी रखेंगे. इसके लिए ऊपर से निर्देश का इतंजार नहीं करेंगे एवं अपनी स्थानीय स्थिति में सुधार लाएंगे ।
- प्रत्येक शाला में बच्चों को सीखने में सहयोग देने हेतु इच्छुक एवं योग्य टीम का गठन करेंगे जो शाला अवधि के बाद स्वयंसेवक के रूप में विशेष कक्षाओं का संचालन करेंगे और बच्चों में FLN लक्ष्य प्राप्त करने में सहयोग करेंगे ।

एजेंडा नौ: प्रत्येक प्राथमिक शाला में शाला तैयारी कार्यक्रम

राज्य के प्रत्येक शासकीय, अनुदान प्राप्त एवं निजी प्राथमिक शालाओं में 90 दिवसीय शाला के लिए तैयारी कार्यक्रम (School Readiness Program) को बहुत प्रभावी ढंग से लागू किया जाना है. इस कार्यक्रम का उद्देश्य मुख्य रूप से बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करना है. राज्य में वि गत दो वर्षों से यह कार्यक्रम स्कूलों में आयोजित किया जा रहा है. इस कार्यक्रम की प्रभाविता का अध्ययन भी राज्य में NCERT के माध्यम से किया जा रहा है. इस वर्ष इस कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु निम्नलिखित तैयारियां कर लेवें:

1. SCERT द्वारा तैयार सामग्री को समय पर सभी शासकीय प्राथमिक शालाओं में उपलब्ध करवाना सुनिश्चित करें ।
2. राज्य के सभी प्राथमिक शाला के शिक्षकों को शाला के लिए तैयारी संबंधित कार्यक्रम की जानकारी हेतु आनलाइन उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन कर लेवें ताकि यह कार्यक्रम सभी स्कूलों में आयोजित हो ।
3. हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम से स्कूलों में इस कार्यक्रम को लागू करने हेतु सभी आवश्यक सहयोग एवं सुझाव देंवें ।
4. निजी एवं अनुदान प्राप्त शालाओं में भी इस कार्यक्रम को लागू करने में सभी आवश्यक सहयोग देवें ।
5. कार्यक्रम की संरचना और गतिविधियाँ:

- अवधि: यह कार्यक्रम सामान्यतः शैक्षणिक सत्र के प्रारंभ में लगभग 12 सप्ताह (या 3 माह) की अवधि का होता है।
- लक्षित समूह: मुख्य रूप से कक्षा 1 में नव प्रवेश लेने वाले बच्चे। कुछ संदर्भों में, यह आंगनवाड़ी से प्राथमिक विद्यालय में आने वाले बच्चों के लिए एक सेतु के रूप में भी कार्य करता है।
- गतिविधियाँ : कार्यक्रम में विविध प्रकार की रुचिकर और आकर्षक गतिविधियाँ शामिल होती हैं- जैसे:
  - कहानी सुनाना और कविता पाठ
  - चित्रकारी, रंग भरना, मिट्टी का काम (क्ले मॉडलिंग) और अन्य सृजनात्मक कलाएँ
  - इनडोर और आउटडोर खेलकूद
  - पहेलियाँ और दिमागी कसरत वाले खेल
  - वस्तुओं को गिनना, छाँटना और जमाना
  - समूह चर्चाएँ और भूमिका निभाना (रोल-प्ले)
  - संगीत और नृत्य

एजेंडा दस: प्रत्येक शाला में सौ दिन सौ कहानियाँ / दीवार पत्रिका

नए सत्र के प्रारंभ से ही राज्य के सभी शालाओं में बच्चों के पठन कौशल के विकास हेतु पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों को प्रतिदिन पढने की आदत विकसित करने के उद्देश्य से प्रत्येक शाला में सौ दिन सौ कहानियाँ अभियान का आयोजन नियमित रूप से किया जाए । प्रत्येक विद्यार्थी को प्रतिदिन एक पुस्तक पढने, पढी हुई पुस्तक पर आपस में चर्चा करने का अवसर देने एवं इस अभियान के माध्यम से समझ के साथ पढना एवं पढ़ने के स्पीड में वृद्धि करने की दिशा में प्रयास जारी रखा जाए। बच्चों के रचनात्मक कौशल के विकास एवं पठन कौशल विकास हेतु प्रत्येक शाला में एक मासिक दीवार पत्रिका निकालना प्रारंभ करें। इसके लिए प्रतिमाह एक संपादक मंडल, प्रदर्शित करने का स्थान एवं नाम आदि निर्धारित कर प्रतिमाह इसका प्रकाशन प्रारंभ करें।

यदि आप अपनी शाला में नवाचार, उत्कृष्ट शिक्षण या प्रेरक कार्य कर रहे हैं तो हम आपका स्वागत करते हैं कि आप अपने विवरण को हमारे साथ साझा करें। चर्चा पत्र में आपके योगदान को स्थान देकर इसे अन्य शिक्षकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनाया जाएगा।

कृपया अपना कार्य विवरण charchapatra@gmail.com पर भेजें.

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

राज्य परियोजना कार्यालय , समग्र शिक्षा ,